मादिकनको लैकै चल्यो है तौ जप योग ते बडी शोभा को प्राप्त सिद्धरूप रामचंद्र हैं सकल साधनरूप लक्ष्मण हैं अष्टसिद्धि रूप सीताहैं औ कहूं सिद्धि मनो फल्योपाठ है सो अर्थ खुल्यो है ॥ ॥ ३० ॥ उछाह जो आनंद है तेहिते सबपुर चल्यो कहे सब पुरवासी चले तौ या जानो पुरीमें उछाहहू रामहीं के साथ चलो गयो ॥ ३१ ॥ गेहु कहे पिंजरा ॥ ३२ ॥

मू०-चित्रपदाछंद ॥ रूपहिदखतमाहैं । ईशकहौनरकोहैं॥ संभ्रमचित्तअरूझै । रामहियोंसबबूझै ॥ ३३ ॥ चंचरीछंद ॥ कौनहौकिततेचलेकिततजातहौकेहिकामजू । कौनकीदुहिताब हूकहिकौनकीयहवामजू ॥ एकगांउरहौकिसाजनमित्रबंधुबखा निये । देशकेपरदेशकेकिधौंपंथकीपहिंचानिये ॥ ३४ ॥ जगमो हनदंडक ॥ किधौंयहराजपुत्रीवरहींवयोहैकिधौंउपाधिवऱ्योहै यहिशोभाअभिरतहौ । किधौंरतिरतिनाथजससाथकेशवदा सजाततपोवनशिववैरसुमिरतहौ । किधौंमुनिशापहतकिधौंब्र ह्मदोषरत किधौंसिद्धियुतसिद्धपरमविरतहौ । किधौंकोऊठग हौठगौरीलीन्हेकिधौंतुमहरिहरश्रीहौशिवाचाहतफिरतहौ॥३५॥

टी०-सब मगके प्राणी तिनहुनकी सुंदरता देखि कै मोहत हैं सो मननें कहत हैं कि हे ईश ! हे भगवन् ! ये कोहैं या प्रकार संभ्रममें सबके चित्त अरुझत हैं तब रामहीं सों या प्रकार सब बूझै कहे पूंछत हैं सो आगे कहत हैं ॥ ३३ ॥ बहू पुत्रवधू साजन कहे स्वामी ॥ ३४ ॥ कि यह जो स्त्री है सो राजपुत्री है ताको बरहीं कहे जबरईसों बरचो है कहे विवाह्यो है अथवा यह जो राजपुत्री है ताहीं माता पिताकी आज्ञा मेटिकै अपनी इच्छासों तुमको जबरईबरचो है कि तुम याको उपाधि कहे छलसों बरचो है ॥ "कपटोस्त्री व्याजदम्भोपधयच्छद्मकैतवे" इत्यमरः ॥ ऐसी शोभासों अभिरत कहे युक्त हौ काहे ते कि जो तुमको तपस्वी जानि राजा अपनी इच्छासों विवाहदे तौ तुम्हारे आश्रमपर्यन्त आपने लोग संग करिदेते सोनहीं है तासों यह

जानि परत है कि ताही राजाके भयसों बनको भागे जात हौ इति भावार्थः ॥ जस संसार जीत्यो है ताको यश रूप लक्ष्मणहैं शिवजी नयनकी आगिसों जारयो ता बैरको सुमिरतको शिवसे लरिबेको जात हौ अथवा शिवके बैर को सुमिरत हौ तासों तपोवन में तप करिबेको जात हौ जासों बडो तप करि तपोबलसों शिवको जीतै कि सिद्धि तप सिद्ध अथवा मुक्ति तासों युक्त तुम परम विरत सिद्ध हौ परम विरत कहि या जनायो कि संसारसों अति विरक्त है अति बडो तप करयो है यासों देह धरि सिद्धि तुम्हारे संगसंग फिरतिहै ॥ "सिद्धिस्तुमोक्षेनिष्पत्तियोगयोरित्यभिधानचिन्तामणौ" ॥ कि हरि औ हर औ श्रीलक्ष्मी हौ शिवा जो पार्वती हैं तिन्हैं चाहत कहे ढूँढत फिरत हौ ॥ ३९ ॥

मू०–मत्तमातंगलीलाकरनदंडक। मेघमंदाकिनीचारुसौदामिनीरूपरूरेलसैंदेहधारीमनो । भूरिभागीरथीभारतीहंसजाअंशकेहैंमनोभागभारेमनो ॥ देवराजालयेदेवरातीमनोपुत्रसंयुक्तभूलोकमेंसोहिये । पक्षदूसंधिसंध्यासधीहैमनोलक्षियेस्वच्छप्रत्यक्षहीमोहिये ॥ ३६ ॥

टी०–मेघ औ मंदाकिनीआकाशगंगा औ सौदामिनीकहेबिजुली ये तीनौं देहधारी मानो रूरेकहे सुंदर रूपकहे बेषसों लसत हैं अथवा रूरेकहे विमल जो रूपसौंदर्यहै तेहिकरिकै देहधारी लसै कहे शोभितहैं यासों या जनायो कि मेघादिक तीनों जब सुंदरतासों मिलिकै रूप धरैं तब रामादिकनके रूपसम होइ कि मानो भागीरथी गंगा औ भारती सरस्वती औ हंसजा यमुना तिनके जे हैं भूरि कहे संपूर्ण अंश कहे भाग तिनहिंनके भारे भाग कहे भाग्य भनौ कहे कहियत है अर्थ भागीरथी भारती हंसजाके अंशनके बडे भाग हैं जिन ऐसे सुंदर रूप पाये हैं भागीरथीके पूर्णांशावतार रूप लक्ष्मण हैं भारतीके पूर्णांशावतार रूप सीता हैं यमुना के पूर्णांशावतार रूप रामचन्द्र हैं देवराजको पुत्र जयंत औ कीदू कहे दूनौ कृष्णपक्ष तिनकी संधिमें स्वच्छ संध्या सधी है स्थित है जाको प्रत्यक्षही लक्षिये कहे देखियत है औ

शोभा सों मोहियत है कृष्णपक्षरूप राम हैं शुक्लपक्ष रूप लक्ष्मणहैं संध्यारूप सीताहैं अथवा दूनों जे पक्ष हैं तिनमें संधि कहे मध्य है तौ शुक्लादि गणना सों दुवौ पक्षनको मध्य पूर्णिमा है तौ संधिपदते पूर्णिमा जानौ याहूमें पूर्णिमारूप सीता हैं दुवौ पक्षरूप राम लक्ष्मण हैं औ तीनों संध्या परस्परसधी हैं अर्थ कि एकत्र हैं प्रातःसंध्या रक्त है मध्याह्न संध्या शुक्ल है सायंसंध्या श्याम है यथा सामसंध्यायाम्॥"पूर्व संध्यातुगायत्री रक्तांगीरक्तवाससा ॥१॥मध्याह्नेतुयासंध्या श्वेतांगीश्वेतवाससा ॥२॥ अपराह्नेतुयासंध्या कृष्णांगीकृष्णवाससा" ॥कतहूं संध संध्या संधी या पाठ हैं तौ दुवौ पक्षनके संघ कहे साथ संध्या सधी है सो जानो ॥ ३६ ॥

मू०—अनंगशेखरदंडक ॥ तड़ागनीरहीनतेसनीरहोतकेशवदासपुंडरीकझुंडभौंरमंडलीनमंडहीं । तमालवल्लरीसमेतिसूखिसूखिकैरहेतबागफूलिफूलिकैसमूलशूलखंडहीं ॥ चितैचकोरनीचकोरमोरमोरनीसमेत हंसहंसिनीसमेतशारिकासबैपढ़ैं । जहींजहींविरामलेतरामजूतहींतहींअनेकभांतिकेअनेकभोगभागसोबढ़ैं ॥ ३७ ॥

टी०—पुंडरीक कमल भाग सों कहे भाग्य सों अथवा द्विगुण चतुर्गुणादि भाग कहे हींसा सों ॥ ३७ ॥

मू०—सुंदरीछंद ॥ घामकोरामसमीपमहाबल ॥ शीतहिलागतहैअतिशीतल ॥ ज्योंघनसंयुतदामिनिकेतन । होतहैंपूषनकेकरभूषन ॥ ३८ ॥ मारगकीरजतापितहैआति । केशवसीतहिशीतललागति ॥ ज्योंपदपङ्कजऊपरपाँयनि । दैजोचलैतेहिते सुखदायनि ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ प्रतिपुरऔप्रतिग्रामकी, प्रतिनगरनकीनारि ॥ सीताजूकोदेखिकै, वर्णतहैंसुखकारि ॥ ४० ॥ जगमोहनदंडक ॥ वासोंमृगअंककहैंतोसोंमृगनयनीसबवहसुधाधरतुहूंसुधाधरमानिये । वहद्विजराजतेरेद्विजराजिराजैंवहकलानिधितुहूंकलाकलितबखानिये । रत्नाकरकेहैंदोऊकेशवप्रकाशकर

अंबरविलासकुवलयहितमानिये । वाकेअतिशीतकरतुहूंसीता शीतकरचंद्रमासीचंद्रमुखीसबजगजानिये ॥ ४१ ॥

टी०-घामको जो महाबल कहे अति तेजहै सो रामके समीप में सीताको अति शीतल लागतहै जैसे घन जे मेघहैं तिनते युक्त जो दामिनी बिजुली है ताके तनुमें पूषण जे सूर्य हैं तिनके कर करणि भूषण होतहैं सूर्यकी किरणें मेघनमें परतीहैं तब इंद्रधनुष होतहै सोई दामिनीको भूषण समहै ॥३८॥ हेतु यह कि पृथ्वी की सीता पुत्रीहैं रामचन्द्र जामातुहैं तासों पृथ्वीकी रज तिनको सुख दियोई चहै तामें युक्ति यह कि पंकऊपर पांउ धारिकै चलै तौ शीतलई लागत है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ या प्रकार कोऊ स्त्री सीतासों कहतिहै कि वह जो चंद्रमा है जाको मृगअंक सब कहत हैं मृगा जो शशा है सोहै अंकमें गोदमें मध्य इति जाके अथवा मृगको अंक कहे चिह्नहै जाके औ तोहूंको मृगनयनी कहतहैं औ वह सुधाधरहै सुधा अमृत को धरे है औ तुहूं सुधाधर है सुधासम हैं अधर ओष्ठजाके औ वह द्विजराज कहा वत है तेरेहू द्विज जे दंतहैं तिनकी राजिकहे पंगति राजतिहै औ वह षोडशकलनको निधिहै औ तुहूं अनेकजे नेत्र विक्षेपादि कला हैं अथवा चौसठि कला तिनसों कलितहै औ वह रत्नाकर जो समुद्र है ताको प्रकाशकर कहे बढावन हार है पूर्णमासीके चन्द्रमाके उदयसों समुद्र बाढ़त है प्रसिद्ध है औ तू भूषणनके रत्नको जो आकर समूह है ताको प्रकाश शोभा करता है अर्थ तेरी छबिसों भूषणनके रत्न शोभा पावत हैं औ चन्द्रको अंबर आकाशमें बिलास है सीताको अंबर वस्त्रमें औ चन्द्रमा कुवलयको हित है औ सीता कुवलय कहे पृथ्वी मंडलको हितकरे अतिप्रिय लागतिहै अर्थ सौंदर्यादिक गुण सीतामें ऐसे हैं जासों सबको प्रिय है औ वाके चन्द्रमाके अति शीत है कर कहे किरणि औ हे सीता तुहूं शीतकर है जो तो को देखत हैं ताके लोचन शीतल हैं तो जौन जौन जिह्मगुण चंद्रमा मोहैं ते तोहूं में हैं याते हे चंद्रमुखी ! सब जग करिकै तोको चन्द्रमा सम जानियतहै अर्थ सब जग तोको चन्द्रमा सम जानत हैं ॥ ४१ ॥

मू०अन्यच्च ॥ कलितकलंककेतुकेतुअरिसेतुगातभोगयोगकोअयोगरोगहीकोथलसों ॥ पून्योईकोपूरनपैप्रतिदिनदूनोदूनो क्षणक्षणक्षीणहोतछीलरकीजलसों । चंद्रसोंजोवरणतरामचंद्र-की दोहाईसोईमतिमंदकविकेशवकुशलसों । सुंदरसुवासअरु कोमलअमलअतिसीताजूकोमुखसखिकेवलकमलसों ॥ ४२ ॥

टीका–दूसरीस्त्री ताकोमत खंडिकै आपनोमत कहतिहै कलंक कि जो केतुकहे पताका है अर्थ पताकासम जाको कलंक प्रसिद्ध है औ केतुको अरि शत्रु है राहु केतु एकइके खंड हैं तासों अक्षर मैत्रीके लिये केतु कह्यो औ स्त्री आदिके जे भोग हैं तिनको जो योगसंयोग रेताको अयोग असमर्थ है गुरुशापसों क्षयरोग युक्त है क्षणक्षण क्षीण होतजो छीलरकहे दीना अथवा अंजलिकोजल है तासम प्रतिदिन दूनों क्षीणहोत हैं ॥ ४२ ॥

मू०–अन्यच्च ॥ एकेकहैंअमलकमलमुखसीताजूको एकक हैंचन्द्रसमआनंदकोकंदरी । होइजोकमलतौरयनिमैंनसकुचैरी चंदजोतौबासरनहोइद्युतिमंदरी । बासरहीकमलरजनीहीमेंचंद्रमुखबासरहूरजनिविराजैजगबंदरी । देखेमुखभावैअनदेखेईकमलचंद तातमुखमुखैसखीकमलैनचंदरी ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ सीतानयनचकोरसखि, रविवंशीरघुनाथ ॥ रामचंद्रसियकमलमुख,भलोबन्योहैसाथ ॥ ४४॥ विजयछंद ॥ बहुबागतड़ागतरंगनितीरतमालकीछांहबिलोकिभली । घटिकायकबैठतहैंसुखपायबिछायतहांकुशकाशथली ॥ मगकोश्रमश्रीपतिदूरिकरैंसियकोशुभवाकलअंचलसों । श्रमतेऊहरैंतिनकोकहिकेशवचंचलचारुहगंचलसों ॥ ४५ ॥ सोरठा ॥ श्रीरघुबरकेइष्ट,अश्रुबलितसीतानयन ॥ सांचीकरीअहष्ट, झूंठीउपमामीनकी ॥ ४६ ॥

टी०–तीसरी स्त्री दुवौ को मत खंडि आपनो कहति है कमलचंद्रके देखेहू पर मुख भावत है औ कमलचन्द्र मुखके अन-

देखे ही भावत है जब या मुखको देखो तब कमलचंद्रके देखिबे की इच्छा नहीं होति जब उत्तमवस्तु देखो तब अनुत्तम वस्तु देखे अच्छीनहीं लागति है ॥ ४३ ॥ सूर्यको औ चकोर को औ चंद्रको औ कमल को स्वाभाविक विरोध है सो इहाँ भलो कहे अद्भुत साथ बन्यो है ॥ ४४ ॥ दृगंचल दृगकोर ॥ ४५ ॥ श्रीरघुबर के इष्ट कहे प्रिय अश्रु आनंदाश्रु करिकै वलित युक्त जे सीताके नयन हैं तिन मीनकी जो झूठी उपमा अदृष्ट रही है ताको सांची करी अर्थ मीन जल में रहते हैं नयन जलमें नहीं रहत समतामें यह भेद रह्यो है सो आनंदाश्रु जल में बूड़ि कै सीता के नयन सांची करी ॥ ४६ ॥

मू०-दोहा ॥ मारगयोंरघुनाथजू, दुखसुखसबहीदेत ॥ चित्रकूटपर्वतगये, सोदरसियासमेत ॥ ४७ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामस्यचित्रकूटगमनं नामनवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

टी०-दर्शन सों सुख देत वियोग सों दुख देत ॥ ४७ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननि जनकजानकी जानकी जानिप्रसादाय जनजानकी प्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां नवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

मू०-दोहा ॥ यहप्रकाश दशमेंकथा, आवनभरतसुनाम ॥ राजमरणअरुतासुको, बसिबोनंदिग्राम ॥ १ ॥ दोधकछंद ॥ आनिभरतपुरीअवलोकी । स्थावरजंगमजीवसशोकी ॥ भाट नहींविरदावलिसाजैं ॥ कुंजरगाजैंनदुंदुभिबाजैं ॥ २ ॥ राजसभानविलोकियकोऊ । शोकगहेतवसोदरदोऊ ॥ मंदिरमातुविलोकिअकेली । ज्योंबिनवृक्षविराजतिवेली ॥ ३ ॥ तोटकछंद॥ तबदीरघदेखिप्रणामकियो ॥ उठिकैउनकण्ठलगाइलियो ॥ न पियोजलसंभ्रमभूलिरहे । तबमातुसोंबातभरत्थकहे ॥ ४ ॥

टी०-नाम कहे प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २॥ राज सभामें कोऊ न देख्यो तब शोकको गहे औ माता के मंदिरमें जाइ कै माताको अकेली देख्यो तब शोक गहे ॥ ३ ॥ ४ ॥

विजयाछंद ॥ मातुकहांनृपतातगयेसुरलोकहिक्योंसुतशोकलये ॥ सुतकौनसुरामकहांहैंअबैबनलक्ष्मणसीयसमेतगये । बनकाजकहाकहिकेवलमोसुखतोकोकहासुखयामेंभये । तुमको प्रभुताधिकतोकोकहाअपराधबिनासिगरेईहये ॥ ५ ॥ दोहा ॥ भर्त्तासुतविद्वेषिनी, सबहीकोदुखदाइ ॥ यहकहिदेखेभरततब, कौशल्याकेपाँइ ॥ ६ ॥ तोटकछंद ॥ तबपांयनजाइभरत्थपरे । उनभेंटिउठाइकैअंकभरे ॥ शिरसूंघिविलोकिबलाइलई । सुततोविनयाविपरीतिभई ॥ ७ ॥ भरत-तारकछंद ॥ सुनुमातभई यहबातअनैसी । जुकरीसुतभर्तृविनाशिनिजैसी ॥ यहबातभई अबजानतजाके । द्विजदोषपरैसिगरेशिरताके ॥ ८ ॥ जिनके रघुनाथविरोधबसैजू ॥ मठधारिनकेतिनपापग्रसैजू ॥ रसरामर स्योमननाहिंनजाको । रणमेंनितहोइपराजयताको ॥ ९ ॥ कौशल्या ॥ जनिसौंहकरौतुमपुत्रसयाने । अतिसाधुचरित्रतुम्हैंहम जाने ॥ सबकोसबकालसदासुखदाई । जियजानतिहौंसुतज्यौं रघुराई ॥ १० ॥ चंचरीछंद ॥ हाइहाइजहांतहांसबह्वैरहीसिगरीपुरी । धामधामनिसुन्दरीप्रगटींसबैजेहुतींदुरी ॥ लैगयेनृपनाथकासबलोगश्रीसरयूतटी । राजपत्निसमेतिपुत्रनिविप्रलापयगढ़ीरटी ॥ ११ ॥

टी०-॥ ५ ॥ ६ ॥ लघुको शिरसूँघिबो बड़ेनकी प्रीतिरीतिहै रोगबलाइलीबोस्त्रीनके प्रसिद्ध हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ शिवआदि देवनके मठकी जे पूजालेतहैंते मठधारी कहावतहैं रसकहे प्रेमअंगरादौ "विषवीर्येन्द्रवेरागेगुणेरसः" इत्यमरः रस्यो भीज्योयुक्त इति ॥९॥ ॥ १० ॥ विप्रलाप जे हैं अनर्थ वचन अथवा कैकेयी प्रति विरोध

वचन तिनकी गढी कहे समूह रढी कहत भये कि कैकेयीही के करत ऐसो विघ्न भयो तासों याको मुखदेखिबो उचित नहीं है इत्यादि वचन सब कहत हैं । "विप्रलापो विरोधोक्तावनर्थकवचस्यापि" इत्यभिधानचिन्तामणिः ॥ ११ ॥

मू०-सोमराजीछंद ॥ करीअग्निअर्चा । मिटीप्रेतचर्चा ॥ सबैराजधानी । भईदीनवानी ॥ १२ ॥ कुमारललिताछंद ॥ क्रियाभरतकीनी । वियोगरसभीनी ॥ सजीगतिनवीनी । मुकुंदपदलीनी ॥ १३ ॥ तोटकछंद ॥ पहिरेवकलासुजटाधरिकै । निजपाँयनिपंथचलेअरिकै ॥ तरिगंगगयेगुहसंगलिये । चित्र-कूटविलोकतछाँडिदिये ॥ १४ ॥

टी०-जब भरत अग्निसों अर्चा पूजा करी अर्थ चितामें अग्नि दियो तब प्रेतचर्चा मिटी अर्थ सब अयोध्यावासी परस्पर अनेक प्रेतवार्ता करत रहे ताको छोंडिदीन वाणी भये अर्थ करुणा स्वर करिकै रोये मरण समयमों औ दाह भूमिमें लैजात मों औ दाह होतमों अधिक अधिक तर वियोग मानि रोइवेकी रीति प्रसिद्ध है अथवा अग्निकरीकहे चितामें अग्नि दियो तब ते अशुद्धिसो अर्चाकहे देवपूजा मिटी औ प्रेतचर्चाभई इतिशेषः ॥ १२ ॥ क्रिया षोडशीआदि भरत नीकी करत भये ताके वादि मुकुंद रामचन्द्रके वियोगरसमें भीनी नवीनी गति कहे दशावल्कल वसनादि साजी औ मुकुंदपद लीनी कहे ज्ञान बुद्धि इति सजी अर्थ पिताकी क्रिया पूर्ण करि रामचन्द्रके चरणनमें मनु-लगायो गति पद श्लेष है एक पक्ष दशा जानौ एक पक्ष बुद्धि जानौ "गतिस्त्रीमार्गदशयोर्ज्ञानेयात्राभ्युपाययोरितिमेदिनी" ॥ ॥ १३ ॥ अरिकै कहे हठ करिकै गंगा उतरिकै गुहको संग कहे ज्ञातिसमूह सूधी मार्ग बताइबेके लिये गये जब चित्रकूट देख्यो तब तिन्हैं छोड़िदियो ॥ १४ ॥

मू०-मदनमोदकछंद ॥ सबसारसहंसभयेखगखेचरबारिद ज्योंबहुबारनगाजे । बनकेनरवानर किन्नरबालकलैमृगज्यों मृ

गनायकभाजे ॥ तजिसिद्धसमाधिनके सबदीरघदौरिदरीनमें आसनसाजे । भूतलभूधरहालेअचानकआइभरत्थकेदुंदुभिबाजे ॥ १५ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रलक्ष्मणसहित, शोभितसीतासंग । केशवदाससहासउठि, चलेधरणिधरशृंग ॥ १६ ॥ लक्ष्मण-मोहनछंद ॥ देखहुभरतचमूसजिआये । जानिअबलहमकोउठिधाये ॥ हींसतहयबहुवारणगाजे । जहँतहँदीरघदुंदुभिबाजे ॥ ॥ १७ ॥ तारकछंद ॥ गजराजनिऊपरपाखरसोहैं । अतिसुंदरशीशशिरोमणिमोहैं ॥ मणिघूंघुरघंटनकेरवबाजैं । तडितायुतमानहुँवारिदगाजैं ॥ १८ ॥ विजयछंद ॥ युद्धकोआजुभरत्थचढ़े धुनिदुंदुभिकीदशहूँदिशिधाई । प्रातचलीचतुरंगचमूवरणीसोनकेशवकैसेहुँजाई ॥ यौंसबकेतनत्रानानिमेंझलकीअरुणोदयकीअरुणाई । अंतरतेजनुरंजनकोरजपूतनकीरजऊपरआई ॥ १९ ॥

टी०-सारस हंस औ और जे खग पक्षी हैं ते: खेचरकहे आकाशगामी भये जैसे मृगनायक सिंह जौन ग्रीवादि अंग पकरि पायो सोई अंग गहि मृगको लै भाग्यो ताही प्रकार अतिभय सों अपने अपने बालकनको लै किन्नरादि भागे ॥ १५ ॥ किन्नरादिकी या दशा देखि हास्यपूर्वक कारण देखिबेको धरणिधर शृंगमें चढ़े ॥ १६ ॥ हींसत बोलत ॥ १७ ॥ पाखरझूल ॥ १८ ॥ रजनको क्षत्र धर्म में रंजित करिबेको मानौं रजपूतनकी रज रजोगुण रजपूतीइति ऊपर कहिआयेहैं ॥ १९ ॥

मू०-तोटकछंद ॥ उठिकैधरधूरिअकाशचली । बहुचंचलबाजिखुरीनदली ॥ भुवहालतिजानिअकाशहिये । जनुथंभितठौरनिठौरकिये ॥ २० ॥ तारकछंद ॥ रणराजकुमारअरूझहिगेजू । अतिसन्मुखघायनिजूझहिंगेजू ॥ जनुठौरनिठौरनिभूमिनवीने । तिनकेचढिवेकहँमारगकीनें ॥ २१ ॥ सीताजू-तोटकछंद ॥ रहिपूरिविमाननिव्योमथली । तिनकोजनुटारनधूरि

चली ॥ परिपूरिअकाशहिधूरिरही । सुगयोंमिटिशूरप्रकाशस ही ॥ २२ ॥ दोहा ॥ अपनेकुलकोकलहक्यों, देखहिंरविभगवंत । यहैजानिअंतरकियो, मानोमहीअनंत ॥२३॥तोटकछंद ॥ बहुतामहदीहपताकलसै । जनुधूममेंअग्निकीज्वालबसै ॥ रसना॥किधौंकालकरालघनी । किधौंमीचुनचैचहुँओरवनी ॥ २४॥ दोहा ॥ देखिभरतकीचलध्वजा, धूरिनमेंसुखदेत । युद्धजुरनको मनहुँप्रति, योधनबोलेलेत ॥ २५ ॥ लक्ष्मण-दंडकछंद ॥ मारिडारौंअनुजसमेतयहिखेतआजु मेटिपरौंदीरघवचननिजमुरको । सीतानाथसीतासाथबैठेदेखिछत्रतरयहिसुखशोषौंशोकसबहीकेउरको ॥ केशवदासविलासवीसविस्वेवासहोइकैकेयीके अंगअंगशोकपुत्रज्वरको ॥ रघुराजजूको साजसकलछिड़ाइलेउँभरतहिआजुराजदेउँयमपुरको ॥ २६ ॥

टी०-सैन्यके भयसों अथवा बालसों हालतें जानिकै थंभित कहे थांभखंभाइति ॥ २० ॥ सन्मुख घाव जूझिकै बीर स्वर्ग को जात हैं सो मानो राजकुमारनके स्वर्ग जाइबेको भूमि मार्ग कहे राह कीन्हें हैं ॥ २१ ॥ विमान आकाशगामी रथ व्योमयान 'विमानोऽस्त्रीत्यमरः' ॥ २२ ॥ मही जो पृथ्वीहै तेहि अनंत कहे अनेक अंतर कियो अनेक धूरिके तुंग उठत हैं तेई अंतर व्यवधान हैं अथवा अनंत लक्ष्मणको संबोधन है ॥ २३ ॥ रसना जिह्वा ॥ ॥ २४ ॥ २५ ॥ पुत्रज्वर कहे पुत्रमरण चौबीसवें प्रकाशमें कह्यो है कि जरा जब आवै ज्वराकी सहेली तहां ज्वराशब्द मृत्युको वाची है रघुराजजूकी साज अर्थ गजरथादि राजसाजराज्य रामचन्द्रको है जाको लै ताके सब साज भरत सजे हैं तिन्हें छड़ाइ रामचन्द्रमें साजिकै राज्यमें बैठारिये इत्यर्थः ॥ २६ ॥

मू०-दोहा ॥ एकराजमेंप्रगटजहँ,द्वैप्रभुकेशवदास॥तहांबसतहैरैनदिन, मूरतिवंतविनास॥ २७ ॥कुसुमविचित्राछंद ॥तबसबसेनावहिथलराखी । मुनिजनलीन्हेसँगअभिलाषी ॥ रघुपति

केचरणनशिरनाये । उनहँसिकैगहिकंठलगाये ॥ २८ ॥ भरत दोधकछंद ॥ मातुसबैमिलिबेकहँआई। ज्योंसुतकीसुरभीसुलवाई ॥ लक्ष्मणस्योउठिकैरघुराई । पाँयनजायपरेदोउभाई ॥२९॥ मातनिकंठउठायलगाये । प्राणमनोमृतदेहनिपाये ॥ आइमिलींतवसीयसभागी । देवरसासुनकेपगलागी ॥ ३० ॥

टी०-पिताने भरतको राजा कियो है तासों भरतको राज्य-पदभ्रष्ट होइ तौ पिताको वचन निष्फल होइ या हेतु भरतको यमपुरको राज्यदेउँ जामें रामचन्द्र सुचित्त ह्वै अयोध्यामें राज्य करैं इति भावार्थः ॥ २७ ॥ अभिलाषी जे मुनिजन हैं अथवा मुनिजन संग लीन्हें औ और रामदर्शनको अभिलाषी हैं तिन्हैं लीन्हें रामचन्द्रके हँसिबेके हेतु लक्ष्मणके बचन हैं ॥ २८ ॥ थोरे दिनकी बियानी गाय लवाइ कहावति है ॥ २९ ॥ भरतके वचन सुनिकै भरत शत्रुघ्नको सीताके पास राखि लक्ष्मण मातनके मिलिबेको आये ताके पाछे सीता जो सभागी हैं सोऊ देवर जे भरत शत्रुघ्न हैं तिन सहित सासुनको आइमिलीं प्राप्त भई औ सासुनके पग लागी ॥ ३० ॥

मू०-तोमरछंद ॥ तबपूछियोरघुराइ । सुखहैंपितातनमाइ ॥ तवपुत्रकोमुखजोइ । क्रमतेउठींसबरोइ ॥ ३१ ॥ दोधकछंद ॥ आंशुनसोंसबपर्वतधोये । जंगमकोजडजीवनरोये ॥ सिद्धबधूसिगरींसुनिआई । राजबधूसबईसमुझाई ॥ ३२ ॥ मोहनछंद ॥ धरीचित्तधीर । गयेगंगतीर ॥ शुचिह्वैशरीर । पितृतर्पिनीर ॥ ३३ ॥ भरत-तारकछंद॥ घरकोचलियेअबश्रीरघुराई । जनहौंतुमराजसदासुखदाई ॥ यहबातकहीजलसोंगलभीन्यो । उठिसोदरपाइँपरेतबतीन्यो ॥ ३४ ॥ श्रीराम-दोधकछंद ॥ राजदियोहमकोबनरूरो । राजदियोतुमकोअबपूरो ॥ सोहमहूंतुमहूंमिलिकीजै । बापकोबोलुननेकहुछीजै ॥ ३५ ॥ ॥ दोहा ॥ राजाकोअरुबापको, बचननमेटैकोइ । जौनमानिये

भरततौ, मारेकोफलहोइ ॥ ३६ ॥ भरत-स्वागताछंद ॥ मद्य पानरतस्त्रीजितहोई। सन्निपातयुतबातुलजोई ॥ देखिदेखिति नकोसबभागै। तासुबातहतिपापनलागै ॥ ३७ ॥

टी०-राम बनगमन दशरथमरण भरतागमनादि कथाक्रमसों कहत सब रोवतभई ॥ ३१ ॥ सिद्ध तपस्वी अथवा देवयोनिविशेष ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न तीनों पांयन परे कि घरको चलिबो उचित है ॥ ३४ ॥ रूरोसुंदर ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ स्त्री जित कहे जो स्त्री करिकै जीतो गयो है अर्थ स्त्रीके वश्य है औ बातुल जो बहुत बातैं कहै ॥ ३७ ॥

मू०-ईशईशजगदीशबखान्यो। वेदवाक्यबलतेपहिचान्यो॥ ताहिमेटिहठिकैरहिहौंतौ। गंगतीरतनकोतजिहौंतौ ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ मौनगहीयहबातकहि, छोंडौसबैविकल्प। भरतजाइभागीरथी, तीरकरयोसंकल्प ॥ ३९ ॥ इन्द्रवज्राछंद ॥ भागीरथीरूपअनूपकारी। चंद्राननीलोचनकंजधारी ॥ वाणीबखानी मुखतत्त्वसोध्यौ। रामानुजैआनिप्रबोधबोध्यौ ॥ ४० ॥ उपेंद्र वज्राछंद ॥ अनेकब्रह्मादिनअंतपायो। अनेकधावेदनगीतगायो ॥ तिन्हैंनरामानुजबंधुजानौ। सुनोंसुधीकेवलब्रह्ममानौ ॥ ॥ ४१ ॥ निजेक्षयाभूतलदेहधारी। अधर्मसंहारकधर्मचारी ॥ चलेदशग्रीवहिमारिवेको। तपीव्रतीकेवलपारिवेको ॥ ४२ ॥ उठोहठीहोहुनकाजकीजै। कहैंकछूरामसोमानिलीजै ॥ अदोष तेरीसुतमातुसोहै। सोकौनमायाइनकोनमोहै ॥ ४३ ॥

टी०-ईश जे विष्णु हैं औ ईश जे महादेव हैं और जगदीश जे ब्रह्मा हैं तिन यह बात बखान्यो है कि स्त्रीजितादिकनके वचन मेटे सों पातक नहीं होत सो हम वेदवाक्य बलसों पहिंचान्यो है अर्थ वेदमें तीन्यो देवके ऐसे वचन हैं ते हम सुन्यो है अथवा तीनों देवन बखान्यो है औ वेदवाक्य बल बलहू सों पहिंचान्यो अर्थ वेदहू यहै कहत है ॥ ३८ ॥ विकल्प विचार भागीरथी मंदा

किनी ॥ ३९ ॥ तत्त्व कहे सारांश सोध्यो कहे ढूँढचो ता सारांश युक्त मुखसों वाणी बखानी अथवा ऐसी वाणी बखानी जामें तत्त्व जो रामकथा तत्त्व है ता करिकै अपने मुखको सोध्यो शुद्ध करचो औ रामानुज जे भरत हैं तिनको प्रबोध कहे उत्तम ज्ञान आनि कहे ल्याइकै बोध्यो बोध करचो बोध्यो पद कहि या जनायो कि रामचन्द्र प्रति बंधु बुद्धिरूपी निशामें सोवत रहैं तामें जगायो ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सुत भरतको संबोधन है यासों या जनायो कि इनकी मायामें मैं मोहिकै तुम्हारी माते इनको बनगमन चाह्यो ४३

मू०–दोहा ॥ यहकहिकैभागीरथी, केशवभईअदृष्ट ॥भरत कह्योतबरामसों, देहुपादुकाइष्ट ॥ ४४ ॥ उपेंद्रवज्राछंद ॥ चले बलीधावनपादुकालै । प्रदक्षिणारामसियाहुकोदै ॥ गयेतेनंदी पुरवासकीनों । सबंधुश्रीरामहिचित्तदीनों ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ केशवभरतहिआदिदै, सकलनगरकेलोग ॥ बनसमानघरघरबसे सकलविगतसंभोग ॥ ४६ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामाणि श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांभरतस्यचित्रकूटागमनंनामदशमः प्रकाशः ॥ १० ॥

टी०–पादुकारूपी इष्ट कहे स्वामी देहु आशययह कि राज्य पर स्वामी चाहिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां दशमःप्रकाशः ॥ १० ॥

मू०–दोहा ॥ एकादशैप्रकाशमें, पंचवटीकोवास॥शूर्पणखा केरूपको, रघुपतिकरिहैंनाश ॥ १ ॥ भरतोद्धताछंद॥चित्रकूट तबरामजूतज्यो । जाइयज्ञथलअत्रिकोभज्यो ॥ रामलक्ष्मणस मेतदेखियो । आपनोसफलजन्मलेखियो ॥ २ ॥

टी०– ॥ १ ॥ भज्यौ कहे प्राप्त भये ॥ २ ॥

मू०–चन्द्रवर्त्मछंद ॥ स्नानदानतपजापजोकरियो । शोधि

शोधिमनजोउरधरियो ॥ योगयागहमजालगिगहियो । रामचन्द्रसबकोफललहियो ॥ ३ ॥ वंशस्थाछंद ॥ अनेकधापूजनअत्रिजूकरचो । कृपालुह्वैश्रीरघुनाथजूधरचो ॥ पतिव्रतादेविमहर्षिकीजहां । सुबुद्धिसीतासुखदागईतहां ॥ ४ ॥ दोहा ॥ पातिव्रतनर्कादेवजा, अनुसूयाशुभगात ॥ सीताजूअवलोकियो,जरासखीकेसाथ ॥ ५ ॥ चतुष्पदीछंद॥ शिरश्वेतविराजैकीरतिराजैजनुकेशवतपबलकी । तनुवलितपलितजनुसकलवासनानिकरिगईथलथलकी ॥ कांपतिशुभग्रीवासबअँगसींवादेखतचित्तभुलाहीं । जनुअपनेमनप्रतियहउपदेशतियाजगमेंकछुनाहीं ॥ ॥ ६ ॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ हरवाइजाइ सियपाँइपरी । ऋषिनारिसूंघिशिरगोदधरी ॥ बहुअंगरागअँगअंगरये । बहुभाँतिताहिउपदेशदये ॥ ७ ॥ सृग्विनीछंद ॥ रामआगेचलेमध्यसीताचली । बन्धुपाछेभयेसामसोंमैभली ॥ देखिदेहीसबैकोटिधाकेभनो । जीवजीवेशकेबीचमायामनो ॥ ८ ॥

टी०-मनको शोधिशोधि शुद्ध करि करि गुनकी जो उर विशे धन्यो है अर्थ तुम्हारो ध्यान कन्यो है अथवा मनहीको शुद्ध करिकै जो उरमें धारण कन्यो अर्थ मनकी जो चंचलता है ताहि छोड़ाइ अपनेबश्य कन्यो है सो हे रामचंद्र ताको सब को फल जो तुम्हारे दर्शन है ताको पायो ॥ ३ ॥ ४ ॥ जरा कहे बुढाईरूपी जो सखीहै ताके साथ देख्यो ॥ ५ ॥ तन वलितकहे युक्त है पलितकहे ढिलाईसों अर्थ वृद्धता सों त्वचामें सिकुरा परिगये हैं सो मानों थलथल की अंगअंगकी वासना विषय वासना निकरिगई है ताही ते अंग अंग सिकुरिगयेहैं सींवा मर्यादा ॥ ६ ॥ हरवाइकहे हरबराइकै ॥ ७ ॥ बनोकहे कह्यो जीवेश ईश्वर ॥ ८ ॥

मू०-मालतीछंद ॥ विपिनविराधबलिष्ठदेखियो । नृपतनयाभयभीतलेखियो ॥ तबरघुनाथबाणकैहयो । निजनिर्णवा

पंथकोठयो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ रघुनायकसायकधरे, सकललोक शिरमौर ॥ गयेकृपाकरिभक्तिवश, ऋषिअगस्त्यकेठौर ॥१०॥ वसंततिलकाछंद ॥ श्रीरामलक्ष्मणअगस्त्यसनारिदेख्यो । स्वाहासमेतशुभपावकरूपलेख्यो ॥ साष्टांगक्षिप्रअभिवंदनजाइ कीन्हों ॥ सानंदआशिषअशेषऋषीशदीन्हों ॥ ११ ॥ बैठारि आसनसबैअभिलाषपूजे । सीतासमेतरघुनाथसबन्धुपूजे॥ जाके निमित्तहमयज्ञयज्यौसोपायो।ब्रह्मांडमंडनस्वरूपजोवेदगायो ॥

टी०-निर्वाण जो मोक्ष है ताके पंथ कहे राह में ठयो कहे युक्त कऱ्यो अर्थ मुक्ति दियो ॥ ९ ॥ सकल लोक शिरमौर जे रघुनाथ हैं ते सायक जे बाण हैं तिनको धरे अगस्त्यके ठौरमें गये अथवा रघुनायक भक्तिके वश कृपाकरिकै अगस्त्यके ठौर गये तहां सकललोक शिरमौर जे अपने सायक हैं तिन्हैं धरे धारण कऱ्यो विष्णु के धनुर्बाण अगस्त्य के यहां धरे रहे हैं ते रामचंद्र को अगस्त्य दियो है यह कथा वाल्मीकीय रामायणमें है अथवा सकललोक शिरमौर जो विष्णु हैं तिनके सायकधरेधारणकऱ्यो अथवा रघुनायकके सकल लोक शिरमौर सायक अगस्त्यके ठौर धरे हैं तालिये औ भक्ति वश कृपाकरि अगस्त्यके ठौर गये॥ १० ॥ स्वाहा अग्नि की स्त्री ॥ ११ ॥ सबै आपने अभिलाष पूजे पूर्ण करे ब्रह्माण्ड को मंडन भूषण जो यह रावरो स्वरूप है ताहीके मिलिबे के लिये हम यज्ञ यज्यौ होम्योकऱ्यौ इति सो यह स्वरूप पायो ॥ १२ ॥

मू०-पद्धटिकाछंद ॥ ब्रह्मादिदेवजबबिनयकीन । तटक्षीर सिन्धुकेपरमदीन ॥ तुमकह्योदेवअवतरहुजाइ । सुतहोंदशरथ कोहोतुआइ ॥ १३ ॥ हमतबतेमनआनन्दमानि । मनचितवत तवआगमनजानि । ह्वाँरहिजैकरिजैदेवकाजु । ममफूलिफल्यो तपवृक्षआजु ॥ १४ ॥ श्रीराम-पृथ्वीछंद ॥ अगस्त्यऋषिराजजूबचनएकमेरोसुनौ। प्रशस्तसबभाँतिभूतलसुदेशजीमेंगुनौ॥

सनीरतरुखंडमंडितसमृद्धशोभाधरैं । तहांहमनिवासकीविमल पर्णशालाकरैं ॥ १५ ॥ अगस्त्य—पद्मावतीछंद ॥ यद्यपिजग कर्त्तापालकहर्त्तापरिपूरणवेदनगाये । अतितदपिकृपाकरिमानु-षवपुधरिथलपूछनहमसोंआये ॥ सुनिसुरवरनायकराक्षसघाय करक्षहुमुनिजनयशलीजै । शुभगोदावरितटविशदपंचवटपर्ण-कुटीतहँप्रभुकीजे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ केशवकहे अगस्त्यके, पंच वटीकेतीर ॥ पर्णकुटीपावनकरी, रामचन्द्ररणधीर ॥ १७ ॥ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ फलफूलनपूरेतरुवररूरेकोकिलकुलकल रवबोलैं । अतिमत्तमयूरीपियरसपूरीबनबनप्रतिनाचतिडोलैं ॥ सारांशुकपंडितगुणगणमण्डितभावनिमेंअरथबखानै ॥ देखहु रघुनायकसीयसहायकमदनरातिमधुजानै ॥ १८ ॥

टी०-॥ १३ ॥ तब कहे तुम्हारो ॥ १४ ॥ प्रशस्तनीको सुदेश समउच्च नीच रहितेति सनीर सजल औ तरु जे वृक्ष हैं तिनको जो खण्ड समूह है तासों मण्डित युक्त औ समृद्ध कहे वर्द्धमान अधिक इति शोभाको धरै धारण करे होइँ निवासको कहे वसि-बे की ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ रामचन्द्रके आगमन सों दंडकारण्यमें रूरे कहे सुन्दर जे तरुवृक्ष हैं ते फल औ फूलनसों पूरे युक्त भये अथवा रूरेजे फल औ फूल हैं तिनसों तरुवर पूरे औ कोकिल के जे कुलजाति समूह हैं ते कलकहे अव्यक्त मधुररव श-ब्दको बोलत हैं ॥ "काकलीतुकलेसूक्ष्मेध्वनौतुमधुरास्फुटे॥ कलो मंदस्तुगंभीरतारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु" इत्यमरः ॥ औ अतिमत्त जे मयूरी हैं ते पिय जे मयूर हैं तिनके रसमें प्रेममें पूरी बनबन प्रति नाचत डोलती हैं अर्थ जहाँ जहाँ मोर नाचत हैं तहाँ तहाँ संग मयूरी डोलती हैं औ सारो सारिका औ शुक जे गुणगणसों मंडित पंडित प्रवीणहैं अर्थ अनेक गुणनमें पंडित हैं ते भावनि-यम कहे अनेक भाव अभिप्राय युक्त गानके अर्थ को बखानत हैं अथवा नृत्यके जे अनेक भाव चेष्टा हैं तिनमें अर्थ को बखानत हैं जब जैसी चेष्टा देखत हैं तब तैसे अर्थ के प्रयोजनको बखान करत हैं तामें तर्क करत हैं कि रघुनायक रामचन्द्र औ सीता औ सहायकजे लक्ष्मण हैं तिनको इन वृक्षादिकन देख्यो है सो